श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ शासन

वन आधारित उद्यमिता से वनवासी आदिवासियों का आर्थिक सशक्तिकरण

छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ मर्यादित

श्री केदार कश्यप
माननीय मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन
वन एवं जलवायु परिवर्तन, संसदीय कार्य,
परिवहन एवं सहकारिता

छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ, आदिवासी और वनवासियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में निरंतर काम कर रहा है। यह संस्था न केवल वनोपज संग्रहण के माध्यम से आजीविका उपलब्ध करा रही है, बल्कि महिलाओं के स्व-सहायता समूहों को संगठित करके उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त और सुदृढ़ भी बना रही है।

छत्तीसगढ़ हर्बल्स इस अभियान का प्रमुख ब्रांड है, जिसके अंतर्गत प्राकृतिक वन उत्पाद जैसे हर्बल औषधियाँ, शुद्ध शहद, महुआ, मिलेट आधारित खाद्य सामाग्री और पर्सनल केयर प्रोडक्ट्स के निर्माण किये जा रहे हैं। इन उत्पादों की ख़ासियत यह है कि ये न केवल पर्यावरण के अनुकूल हैं बल्कि आदिवासी समुदायों के श्रम और परंपराओं की झलक भी प्रस्तुत करते हैं।

तेन्दूपत्ता संग्रहण

- तेन्दूपत्ता संग्राहक 12.15 लाख
- संग्रहण केंद्र 10,631
- तेन्दूपत्ता संग्रहण मात्रा 13.57 मानक बोरा
- तेन्दूपत्ता संग्रहण राशि ₹ 747 करोड़

तेन्दूपत्ता और अन्य लघु वनोपज संग्रहण

वर्ष 2025 में तेन्दूपत्ता संग्रहण में लगभग 12.15 लाख परिवारों को सीधा लाभ मिला है इसके अतिरिक्त तेन्दूपत्ता के विक्रय से होने वाले लाभ का 80% हिस्सा सीधे संग्राहकों तक पहुँचता है, जिससे वनवासी एवं आदिवासी संग्राहक परिवारों की आर्थिक स्थिति मज़बूत हुई है और पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिला है।

महिला स्व-सहायता समूह सामाजिक बदलाव की आधारशिला

महिला समूह संग्रहण से लेकर प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और पैकेजिंग तक सभी चरणों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उनके परिश्रम का नतीजा है कि अब तक 165 से अधिक उत्पाद बाज़ार में उपलब्ध कराए जा चुके हैं। इनकी बिक्री से ₹7.35 करोड़ का व्यापार हुआ है, जिसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी है।

प्रसंस्करण

- 17,500 महिला स्व सहायता समूह
- ₹7.35 Cr विक्रय मूल्य
- 72 प्रसंस्करण केंद्र
- 165 प्रसंस्कृत उत्पाद

सुरक्षित शहद संग्रहण - विनाश विहिन विदोहन

छत्तीसगढ़ हर्बल्स ने पारंपरिक शहद संग्रहण पद्धति में सुधार करते हुए विनाश विहिन विदोहन पद्धति को अपनाया है। इस तकनीक के माध्यम से संग्राहकों को शहद के सतत और सुरक्षित प्रबंधन में प्रशिक्षण मिल रहा है, जिससे उनका कौशल विकसित हो रहा है। इससे बेहतर गुणवत्ता वाला शहद प्राप्त हो रहा है और उनकी आय में भी वृद्धि हो रही है। इस अभिनव और पर्यावरण-अनुकूल तकनीक से न केवल मधुमक्खियों और उनके प्राकृतिक आवास का संरक्षण होता है, बल्कि वनवासियों की सतत आजीविका और जैव विविधता की रक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान मिल रहा है।

वन धन विकास केंद्र (VDVK)

राज्य में स्थापित 155 वन धन विकास केंद्र वनवासी महिलाओं को स्थानीय वन संसाधनों से उद्यमिता के अवसर प्रदान कर रहे हैं। इनमें इमली चपाती , इमली कैंडी (जगदलपुर), आंवला कैंडी (गरियाबंद), मिलेट लड्डू (कवर्धा), मसाला काजू (बस्तर), आयुष उत्पाद पैकेजिंग (गरियाबंद) और दोना-पत्तल निर्माण (कोरबा) जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।

वन धन विकास केंद्र महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाती है, बल्कि उनकी सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित करती हैं। वर्तमान में, इन केंद्रों में लघु वनोपज से 165 प्रकार के उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं, जो स्थानीय और राष्ट्रीय बाजार से महिलाओं की आय बढ़ाने में मदद कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ हर्बल्स ने अपने उत्पादों की गुणवत्ता और विविधता को बढ़ाने के लिए देश के प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संस्थानों के साथ अनुबंध किया है, इससे समूह के सदस्यों का प्रशिक्षण, क्षमता एवं कौशल विकास का कार्य किया जा रहा है।

6 लाख +
वनोपज संग्राहक

4,861
संग्रहण केंद्र

Minor Forest Produce Collection

कुल संग्रहण
3,500 मीट्रिक टन

विक्रय मूल्य
₹15.58 Cr

- IIT भिलाई
- BHU, वाराणसी
- CFTRI, मैसूर
- CIPHET, लुधियाना
- IIMR, हैदराबाद

कल्याणकारी योजनाएँ

तेन्दूपत्ता से ग्रामीणों को मिलने वाला संग्रहण मूल्य

छत्तीसगढ़ सरकार तेंदूपत्ता संग्रहण के लिए **₹5500** प्रति मानक बोरा की दर से संग्राहक को संग्रहण मजदूरी का भुगतान करता है, जो देश में सबसे अधिक है इससे लगभग **12.15 लाख** से अधिक संग्राहक परिवार लाभान्वित हो रहे हैं।

तेन्दूपत्ता संग्राहकों को चरणपादुका का वितरण

वर्ष 2025 में वनवासियों, विशेषकर तेन्दूपत्ता संग्राहकों के पैरों की सुरक्षा की दृष्टि से तथा कठिन जीवन को सरल बनाने हेतु परिवार की महिला मुखिया सदस्य को **चरणपादुका** (जूती) वितरित किए गए। यह योजना संग्राहकों के सशक्तिकरण और संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस वर्ष महिला तेन्दूपत्ता संग्राहको को ₹40 करोड़ की लागत से 12.40 लाख जूती प्रदाय किया गया है। आगामी वर्ष में पुरुष तेन्दूपत्ता संग्राहको को भी चरणपादुका प्रदाय हेतु कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गयी है।

छात्रवृत्ति योजना

हमारी छात्रवृत्ति योजनाओं के माध्यम से अब तक वनवासी परिवार के बच्चों को वर्ष 2025 में कुल **₹10.34 करोड़** की सहायता दी गई है। इसके अंतर्गत मेधावी छात्रों को ₹2,500–₹3,000, 10वीं और 12वीं में 75% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को ₹15,000–₹25,000 तथा व्यावसायिक शिक्षा के लिए **₹25,000** की छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इस पहल से वनवासी समुदायों के असंख्य छात्रों को अपनी शैक्षणिक आकांक्षाएँ पूरी करने और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाया है।

तेन्दूपत्ता संग्राहकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना

सरकार की राजमोहिनी देवी तेन्दूपत्ता संग्राहक सामाजिक सुरक्षा योजना वनवासियों और तेन्दूपत्ता संग्राहकों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है। इस योजना के अंतर्गत परिवार के मुखिया के मृत्यु की दशा में उनके आश्रित को अधिकतम **₹4 लाख** की आर्थिक सहायता दी जाती है। वर्ष 2025 में कुल **₹54.37 करोड़** की राशि वितरित की जा चुकी है, जिससे कठिन परिस्थितियों में इन परिवारों को सहारा मिला है।

छत्तीसगढ़ हर्बल्स के उत्पाद संजीवनी ब्रांड आउटलेट्स और आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से विक्रय किये जाते हैं:

www.cgmfpfed.org www.chhattisgarhherbal.com

/chhattisgarhherbals /chhattisgarhherbals /cgherbals_ /CG_Herbals

CHHATTISGARH HERBALS®
Quality Forest Products